इतिहास का विभाजन

1. **प्रागैतिहासिक काल** – वह काल जिसका कोई लिखित साक्ष्य उपलब्ध नही है। अतः इस काल का इतिहास पूर्णतः उत्खनन में मिले पुरातात्विक साक्ष्यों पर निर्भर है। पाषाण काल को प्रागैतिहासिक काल में रखा जाता है।
2. **आद्य ऐतिहासिक काल** – इस काल की लिखित लिपि तो है, पर या तो उसे पढने में सफलता नही मिली है या उसकी प्रमाणिकता संदिग्ध है। हडप्पा और वैदिक संस्कृति की गणना आद्य ऐतिहासिक काल में की जाती है।
3. **ऐतिहासिक काल** – इस काल का इतिहास लिखित साधनों पर निर्भर करता है। इसके पुरातात्विक व साहित्यिक विवरण उपलब्ध है, लिपि पढने में सफलता भी मिली ह। ईसा पूर्व छठी शताब्दी से ऐतिहासिक काल प्रारंभ होता है।

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत

प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के तीन महत्वपूर्ण स्त्रोंत है –

1. पुरातात्विक स्त्रोत **2. साहित्यिक स्त्रोत** **3. विदेशी यात्रियों के विवरण**

पुरातात्विक स्त्रोत

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की स्थापना **अलेक्जेण्डर कनिंघम** क नेतृत्व में 1861 ई. में की गई। 1902 में **जॉन मार्शल** के द्वारा इसका पुनर्गठन हुआ।

अभिलेख - सबसे प्राचीन अभिलेख मध्य एशिया के **बोगजकोई** नामक स्थान से 1400 ई. पू. का मिला है इसमें वैदिक देवताओं **मित्र, वरूण, इन्द्र और नासत्य (अश्विनी कुमार)** के नाम मिले है। चन्द्रगुप्त मौर्य के सौहगोरा व महास्थान अभिलेख भी अशोक से पहले के है किन्तु अभिलेखों की नियमित परंपरा अशोक के समय से ही शुरू हुई। प्रारम्भिक अभिलेख प्राकृत भाषा मे है–प्रथम संस्कृत अभिलेख, शकक्षत्रप **रूद्रदामन का जूनागढ अभिलेख** है यह संस्कृत भाषा में सबसे बडा अभिलेख है यह दूसरी सदी ईस्वी का है।

बेसनगर (विदिशा म.प्र.) से यूनानी राजदूत **हेलियोडोरस** का **गरूड ध्वज** स्तम्भ लेख प्राप्त हुआ है। इस सरकारी अभिलेख से द्वितीय शताब्दी ई.पू. में भारत में भागवत धर्म के विकास की जानकारी मिलती है। इसमें ब्रम्हालिपि व प्राकृत भाषा का प्रयोग किया गया है। मध्यप्रदेश के **एरण** से **वराह प्रतिमा** पर हूणराज **तोरमाण** का लेख मिलता है। भारत में सबसे अधिक अभिलेख मैसूर (कर्नाटक) में मिले है। **पर्सिपोलिस, नक्श–ए–रूस्तम और बेहिस्तून अभिलेखों** से पता चलता है कि ईरानी सम्राट दारा ने सिन्धु नदी घाटी पर अधिकार किया था। अशोक के **मास्की, गुजर्रा, निट्टूर एवं उदेगोलम** अभिलेखो में अशोक का नाम मिलता है। अशोक के अधिकतर ब्राह्मीलिपि में है। **खरोष्ठी लिपि ईरान में प्रचलित अरेमाइक लिपि** से विकसित हुई। अशोक के अभिलेखों की भाषा प्राकृत है। अशोक के अभिलेख की सर्वप्रथम खोज 1750 ई. में **टीफेन्थैलर** ने की। 1837 ई. में **जेम्स प्रिंसेप** ने अशोक के अभिलेखों की ब्राह्मी लिपि पढो।

सिक्के - सिक्कों के अध्ययन को **मुद्रा शास्त्र (Numismatic)** कहते है। भारत के आरम्भिक सिक्के **आहत सिक्के (पंचमाक्र सिक्के)** है जो लेख रहित ह तथा ई.पू. पॉचवी सदी के हैं ठप्पा मारकर बनाये जाने के कारण इन्हें आहत मुद्रा कहते है। इन पर मछली, पहाड, पेड, हाथी, अर्धचन्द्र, सांड आदि चिन्ह पंच करके ठप्पा लगाकर बनाये जाते थे। सर्वप्रथम **जम्स प्रिसेंप** ने **1835 ई.** में इन सिक्कों को आहत सिक्कों का नाम दिया। **पंचमाक्र सिक्कों** का विस्तृत अध्ययन व इनकी व्याख्या **ई.जे.रैप्सन** ने की है। ग्रीक प्रभाव के कारण भारत में लेख वाले सिक्कों का प्रचलन हुआ। भारत में सर्वप्रथम लेखयुक्त **सोने के सिक्के इंडो–ग्रीक शासकों** ने जारी किये। **वृहद** स्तर पर **कुषाणों** ने सोने के सिक्के चलाये व भारत **में सर्वाधिक स्वर्ण मुद्रायें गुप्तशासकों** ने चलाई।

कुषाण शासकों में **विम कडफिसस** ने सर्वप्रथम **विशुद्व सोने के सिक्के** चलाये। सर्वाधिक सिक्के मौर्योत्तर काल के मिलते है जो सीसे, पोटीन, तॉबा, चॉदी, कॉसे, व सोने के है। **सीसे व प्रोटीन** के सिक्के **सातवाहन शासकों** ने चलाये। **इंडो–ग्रीक** शासकों ने भारत मे पहली बार सिक्कों पर **शासकों के नाम, देवी–देवताओं की आकृतियों और लेख वाले सिक्के** चलाने की प्रथा शुरू की। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने गुप्त शासकों में सर्वप्रथम चॉदी के

सिक्के चलवाये। पूर्व मध्यकाल में स्वर्ण सिक्कों के विलुप्त हो जाने के बाद गांगेयदेव के कल्चुरि ने उन्हें भारत में पुनः प्रारम्भ करवाया। **गांगेयदेव** के सिक्कों पर **लक्ष्मी की आकृति** अंकित है।

प्राचीन भारत के कुछ प्रमुख अभिलेख

अभिलेख		शासक
1. हाथीगुम्फा अभिलेख (उदयगिरी पहाडो–उडोसा)	–	खारवेल (कलिंग शासक)
2. जूनागढ या गिरनार अभिलेख (गुजरात)	–	रूद्रदामन (उज्जैन का शक क्षत्रप)
3. नासिक गुह्यलेख (महाराष्ट्र)	–	गौतमीबलश्री व वाशिष्ठी पुत्र पुलुमावी (सातवाहन वंश
4. नानाघाट अभिलेख (महाराष्ट्र)	–	नागानिका (सातवाहन शासक शातकर्णी-I की पत्नी)
5. प्रयाग स्तम्भ लेख (उत्तरप्रदेश)	–	समुद्रगुप्त
6. मन्दसौर अभिलेख (मध्यप्रदेश)	–	यशोधर्मन (मालवा नरेश)
7. एहोल अभिलेख (मध्यप्रदेश)	–	पुलकेशिन द्वितीय (वातापी का चालुक्य शासक)
8. ग्वालियर अभिलेख (मध्यप्रदेश)	–	मिहिरभोज (प्रतिहार शासक)
9. जूनागढ अभिलेख (गुजरात)	–	स्कन्दगुप्त
10. भोतरी स्तम्भलेख (गाजीपुर–उत्तरप्रदेश)	–	स्कन्दगुप्त
11. उत्तरमेरूर अभिलेख (तमिलनाडु)	–	परान्तक प्रथम (चोल शासक)
12. अयोध्या अभिलेख (उत्तरप्रदेश)	–	धनदेव (पुष्यमित्र शुंग का अयोध्या का राज्यपाल)

साहित्यिक स्त्रोत – साहित्यिक स्त्रोत दो प्रकार के है– **1) धार्मिक साहित्य** **2) लौकिक साहित्य।**

1) धार्मिक साहित्य में ब्राह्मण व ब्राह्मणात्तर साहित्य शामिल है। ब्राह्मण साहित्य में वेद, उपनिषद्, महाकाव्य, पुराण, स्मृति–ग्रन्थ आदि आते है।

2) ब्राह्मणात्तर साहित्य में बौद्व व जैन साहित्य की रचना शामिल है।

ब्राह्मण साहित्य

वेद – वेदों की संख्या चार है– ऋग्वेद. यजुर्वेद. सामवेद एवं अथर्ववेद। चारों वेदों का सम्मिलित रूप **संहिता** कहलाता है। श्रवण परम्परा में सुरक्षित होने के कारण वेदों को **श्रुति** भी कहा जाता है।

ऋग्वेद

ऋग्वेद में कुल **दस मण्डल व 1028 सूक्त** है। इनमें 1017 सूक्त व 11 बालखिल्य सूक्त है जो कि हस्तलिखित प्रतियों में परिशिष्ट के रूप में है। बालखिल्य सूक्त आठवें मण्डल में है। 10वें मण्डल में चारों वर्णों के विषय में जानकारी मिलती है। **ऋक् का शाब्दिक अर्थ है– छन्दों और चरणों से युक्त मंत्र।**

ऋग्वेद की रचना 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. के बीच मानी जाती है। ऋग्वेद का पहला व दसवां मण्डल सबसे बाद में जोडा गया है। ऋग्वेद का पहला मंडल अंगिरा ऋषि को व आठवॉ मण्डल कण्व ऋषि को समर्पित है। ऋग्वेद का नवा मण्डल **सोम** को समर्पित है। ऋग्वेद के **तीसरे मण्डल** में प्रसिद्व देवी सूक्त है, जिसमें सविता की उपासना गायत्री के रूप में की गई है यह **गायत्री मन्त्र** में है। पृथ्वी सूक्त तथा गायत्री मंत्र ऋग्वेद में है। ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल में तीन मन्त्रो की रचना तीन राजाओं ने की है ये तीन राजा त्रास्स्दस्सु ,अजीमीढ और पुरमीढ है। **लोपामुद्रा, घोषा, शची, पौलोमी व काक्षावृत्ति** नामक पांच स्त्रियों ने ऋग्वेद की ऋचाओं की रचना की। ऋग्वेद की ऋचाओं की रचना की। ऋग्वेद का पाठ **होत्री (होतृ)** नामक पुरोहित करते थे।

ऋग्वेद के दो ब्राह्मण है– **1. ऐतरेय** **2. कौषीतिकी** ।

लक्ष्मी का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में हुआ है। ऋग्वेद में इन्द्र व अग्नि का स्तम्भो वाले महल म निवास करते वर्णन किया गया है।

सामवेद

साम का शाब्दिक अर्थ गान है। इसके 75 सूक्तों को छोड कर शेष सभी ऋग्वेद से लिये गये है। ये सूक्त गाने योग्य है। **सामवेद भारतीय संगीत शास्त्र पर प्राचीनतम पुस्तक है।** इसे भारतीय संगीत का जनक माना जाता है। सामवेद पूर्णतः पद्य में लिखा गया है।

सामवेद के तीन पाठ हैं– 1. गुजरात की कौथुम संहिता। 2. कर्नाटक की जैमिनीय संहिता।

3. महाराष्ट्र की राणायनीय संहिता।

सामवेद का प्रथम दृष्टा वेदव्यास के शिष्य जैमिनी को माना जाता है। सामवेद में मुख्यतः **सूर्य की स्तुति** के मंत्र है।

यजुर्वेद

यजुर्वेद गद्य व पद्य दोनो में लिखा गया है। यह **कर्मकाण्ड प्रधान** था। इसमें यज्ञ संबंधी सूक्तों का संग्रह है। इसके दो भाग है, शुक्ल यजुर्वेद एवं कृष्ण यजुर्वेद। **शुक्ल यजुर्वेद को वाजसनेयी संहिता** भी कहा जाता है। कृष्ण यजुर्वेद **गद्य व पद्य** दोनों में लिखा गया है जबकि शुक्ल यजुर्वेद में केवल मंत्र है। **ऋग्वेद, सामवेद व यजुर्वेद को त्रयी** कहा जाता है। यजु का अर्थ यज्ञ होता है।

अथर्ववेद

इसकी रचना सबसे बाद में हुई इसे **त्रयी** से बाहर रखा गया है। **अथर्ववेद में जादू–टोना, तंत्र–मंत्र संबंधी जानकारी है।** इसमें औषधविज्ञान तथा लौकिक जीवन के बारे में जानकारी है। अथर्ववेद में ब्रह्मज्ञान के विषय में जानकारी मिलती है। इसका वाचन **ब्रह्म** नामक पुरोहित करता था अतः इसे **ब्रह्मवेद** भी कहा जाता था अथवा नामक ऋषि इसके प्रथम द्रष्टा थे अतः उन्ही के नाम पर इसे अथर्ववेद कहा जाता है।

ब्राह्मण

वेदों की सरल व्याख्या हेतु ब्राह्मण ग्रंथो की रचना गद्य में की गयी। ब्रह्म का अर्थ यज्ञ है। वैदिक भारत के इतिहास के साधन के रूप में वैदिक साहित्य में ऋग्वेद के बाद **शतपथ ब्राह्मण** का स्थान है। **ऐतरेय ब्राह्मण** में राज्यभिषेक के नियम तथा कुछ राज्यभिषेक किए गये राजाओं के नाम मिलते है।

आरण्यक

इनमें मंत्रों का गूढ एवं रहस्यवादी अर्थ बताया गया है। इनका पाठ एकान्त एवं वन में ही संभव है। जंगल में पढे जाने के कारण इन्हें आरण्यक कहा गया है व कुल **सात आरण्यक** उपलब्ध है। आरण्यकों से ही कालान्तर में उपनिषदों का विकास हुआ।

उपनिषद्

उप का अर्थ 'समीप' और निषद् का अर्थ है 'बैठना'। उपनिषदों में वेदो की दा"र्निक विवेचना है। उपनिषद् वह विद्या है जो गुरू के समीप बैठकर एकान्त में सीखी जाती है। उपनिषद् में पराविद्या (ब्रह्म विद्या) का ज्ञान है। इनमें आत्मा, परमात्मा, जन्म, पुनर्जन्म, मोक्ष इत्यादि विषयों पर चर्चा की गयी है। निम्नलिखित 12 उपनिषद् ही प्रामाणिक माने जाते है। **ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डुक्य, तैतिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, कौषीतिकी, वृहदारण्यक, श्वेताश्वतर।** भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य **'सत्यमेव जयते' मुण्डक उपनिषद** से लिया गया है।

वेदांग

वेदों के अर्थ को सरलता से समझने तथा वैदिक कर्मकाण्डों के प्रतिपादन में सहायतार्थ **वेदांग** नामक साहित्य की रचना की गयी। वेदांग छः है –

1. **शिक्षा**– वैदिक स्वरों की शुद्व उच्चारण विधि हेतु शिक्षा का निर्माण हुआ।
2. **कल्प**– कल्प की रचना गौतम ऋषि ने की।
3. **व्याकरण**– व्याकरण की सबसे प्रमुख रचना 5वीं शताब्दी ई.पू. की पाणिनी कृत अष्टाध्यायी है।

4. **निरूक्त**– क्लिष्ट वैदिक शब्दों के संकलन निघण्टु की व्याख्या हेतु यास्क ने 5वी शताब्दी ई.पू. में निरूक्त की रचना की जो भाषा शास्त्र का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है।

5. **छन्द**– वैदिक साहित्य में गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप,त्रिष्टुप,जगती,वृहती आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है। शास्त्र पर पिंगल मुनि का ग्रन्थ छन्द सूत्र/शास्त्र लिखा गया।

6. **ज्योतिष**– ज्योतिष की सबसे प्राचीन रचना लगध मुनि द्वारा रचित 'वेदांग ज्योतिष' है।

सूत्र– वैदिक साहित्य को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए सूत्र साहित्य की रचना हुई।

कल्पसूत्र– कल्पसूत्र में विधि व नियमों का प्रतिपादन किया गया है। ये तीन है–

1. **श्रोत**– यज्ञ संबंधी नियम।
2. **गृह सूत्र**– गृहस्थ के लौकिक व पारलौकिक कर्तव्यों का विवरण।
3. **धर्म सूत्र**– धार्मिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का उल्लेख। चार वर्णो की स्थितियों ,कर्तव्यों व विशेषाधिकारों का वर्णन धर्मसूत्र में है।

शुल्व सूत्र में यज्ञवेदी के निर्माण के संबंधित नाप आदि का तथा वेदी के निर्माण आदि के नियमों का वर्णन है। **शुल्व सूत्र** से ही सर्वप्रथम भारतीय **रेखा गणित** की शुरूआत होती है। शुल्व सूत्र के **बोधायन प्रमेय** से हमे **समकोण त्रिभुज की भुजाओं** की लंबाईयों का ज्ञान होता है।

महाकाव्य

महाभारत – इसकी रचना **वेदव्यास** ने की थी। इसमें **अठारह पर्व** है। महाभारत का सर्वप्रथम उल्लेख **आश्वलायन गृह सूत्र** में है। **महाभारत को पंचम वेद** भी कहा गया है। भगवद्गीता महाभारत के छठवें पर्व **भीष्म पर्व** का ही भाग है। भगवत् गीता को स्मृति प्रस्थान भी कहा जाता है।

रामायण

इसकी रचना **महर्षि वाल्मीकि** ने की। इसकी रचना संभवत ईसा पूर्व पॉचवी सदी में शुरू हुई।

पुराण

पुराण का शाब्दिक अर्थ प्राचीन आख्यान होता है। पुराणों के रचयिता **लोमहर्ष** व उनके पुत्र **उग्रश्रवा** माने जाते है। पुराणों की संख्या 18 है। इनमें मत्स्य पुराण सबसे प्राचीन व प्रामाणिक माना जाता है।

बौद्धिक साहित्य

सबसे प्राचीन बौद्ध ग्रन्थ **त्रिपिटक है** इनके नाम है : **सुत्त पिटक, विनय पिटक व अभिधम्म पिटक।** ये पालि भाषा में है।

1. सुत्त पिटक – इसमें बुद्ध के धार्मिक विचारों और वचनों का संग्रह है। इसे बौद्ध धर्म का **एनसाइक्लोपीडिया** भी कहा जाता है। सुत्त पिटक पाँच निकायों में विभाजित है –

a) दीर्घ निकाय b) मज्झिम निकाय c) संयुक्त निकाय
d) अंगुत्तर निकाय e) खुद्दक निकाय

जातक कहानियॉ खुद्दक निकाय का हिस्सा ह, इसमें बुद्व क पूर्वजन्म की काल्पनिक कथायें है जातकों की संख्या लगभग 550 है।

2. विनय पिटक – इसमें बौद्व संघ के नियम, आचार विचारों एवं विधिनिषेधों का संग्रह है।

3. अभिधम्म पिटक – यह दार्शनिक सिद्वान्तों का संग्रह है।

संस्कृत बौद्ध ग्रंथ – महावस्तु व ललित विस्तार में महात्मा बुद्व के जीवन का वर्णन मिलता है। ललित विस्तार वैपुल्य सूत्र का ग्रन्थ है।

अन्य संस्कृत बौद्ध ग्रन्थ		लेखक
1. बुद्धचरित (महाकाव्य)	–	अश्वघोष
2. सौन्दरानन्द (महाकाव्य)	–	अश्वघोष
3. सारिपुत्र प्रकरण (नाटक)	–	अश्वघोष
4. विसुद्धिमग्ग	–	बुद्धघोष

ललित विस्तार को आधार बनाकर **मैथ्यू अरनोल्ड** ने **Light of Asia** लिखा है। बद्ध को "**एशिया का ज्योतिपुंज" Light of Asia कहा जाता है।**

हड़प्पा सभ्यता

इस सभ्यता के लिए तीन नामों का प्रयोग होता है –

1. सिन्धु सभ्यता **2. सिन्धु घाटी की सभ्यता** **3. हडप्पा सभ्यता**

हडप्पा के टीलों की ओर सर्वप्रथम **1826** ई. में **चार्ल्स मैसन** ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया। **1856** में **जॉन बर्टन एवं विलियम बर्टन** ने हडप्पा से प्राप्त ईटों का प्रयोग लाहौर से करांची तक रेलवे लाईन बिछाने में किया। 1853 एवं 1856 में कनिंघम ने हडप्पा के टीलों का सर्वेक्षण किया। सर्वप्रथम इस सभ्यता का उत्खनन **हडप्पा** नामक स्थान पर 1921 ई. में हुआ इसी स्थान के नाम पर इसका नाम हडप्पा सभ्यता रखा गया। विकसित हडप्पा सभ्यता का मूल केन्द्र **पंजाब व सिंध** में था किन्तु गुजरात, राजस्थान, हरियाणा व पश्चिमी उत्तरप्रदेश तक के क्षेत्र में इस सभ्यता का विस्तार हुआ। सर्वप्रथम 1921 ई. में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक **सर जॉन मार्शल** के निर्देशन ने **राय बहादुर दयाराम साहनी** ने पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) के मोण्टगोमरी जिले में रावी नदी के तट पर स्थित हडप्पा का अन्वेषण किया।

हड़प्पा सभ्यता का काल निर्धारण

हडप्पा सभ्यता के काल के बारे में विद्वानों की अलग–अलग राय है –

	विद्वान		निर्धारित तिथि
1.	**जॉन मार्शल**	–	**3250 ई. पू–2750 ई. पू.**
2.	**मार्टीमर व्हीलर**	–	**2500 ई. पू. –1500 ई. पू.**
3.	**डी.पी. अग्रवाल व रोमिला थापर**	–	**2300 ई.पू.–1750 ई.पू.**
4.	**अर्नेस्ट मैके**	–	**2800 ई.पू.–2500 ई.पू.**

जॉन मार्शल ने इसे सर्वप्रथम सिन्धु सभ्यता का नाम दिया इस सभ्यता के अब तक 500 से अधिक स्थल प्रकाश में आ चुके है इसमें से सर्वाधिक **250 स्थल गुजरात** में है। **रोडियो कार्बन 14** (C-14) के विश्लेषण के आधार पर डी.पी. अग्रवाल द्वारा हडप्पा सभ्यता की तिथी 2300 ई. पू. से 1750 ई.पू. मानी गई है यह मत सर्वाधिक मान्य प्रतीत होता है।

हड़प्पा सभ्यता का विस्तार

हडप्पा सभ्यता का विस्तार उत्तर में जम्मू से लेकर दक्षिण में नर्मदा तक और पश्चिम में मकरान के समुद्र तट से लेकर पूर्व में उत्तरप्रदेश के मेरठ जिले तक है इसका कुल क्षेत्रफल 13,00,000 वर्ग किलोमीटर है। हडप्पा सभ्यता का भारतीय सीमा में सर्वाधिक उत्तरी पुरास्थल **मॉडा,** (जम्मू की चेनाब नदी के तट पर) तथा दक्षिण छोर **दैमाबाद** (अहमद नगर – महाराष्ट्र) है। सर्वाधिक पश्चिमो पुरास्थल **सुत्कागेंडोर** (बलूचिस्तान) और पूर्वी पुरास्थल **आलमगीरपुर** है। हडप्पा सभ्यता का सर्वाधिक उत्तरी छोर **मुंडीगाक एवं सोर्तुगई** (दोनो अफगानिस्तान) है। ये दोनों स्थल हिन्दूकुश पर्वत के उत्तर में स्थित है। सैन्धव स्थलों का सर्वाधिक संकेन्द्रण (विस्तार) **'हकरा–घग्घर'** (सरस्वती) मार्ग क्षेत्र में है।

सिन्धु सभ्यता के निर्माता –

सिन्धु सभ्यता में कम से कम चार प्रजातियाँ थी –

1. प्रोटो–ऑस्ट्रेलाइड **2. भूमध्य सागरीय** **3. अल्पाइन** **4. मंगोलायड**

हडप्पा सभ्यता के निवासी मुख्यतः भूमध्य सागरीय थे।

सिन्धु सभ्यता के मुख्य स्थल

❖ **हडप्पा** – पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के पुराने **मोण्टगोमरी** जिले व वर्तमान **शाहीवाल** जिले में **रावी नदी** के बांये तट पर स्थित है। हडप्पा के टीले की सर्वप्रथम जानकारी **1826ई.** में **चार्ल्स मेसन** ने दी।

1921 ई. में **दयाराम साहनी ने** इसका सर्वेक्षण किया व बाद में इस स्थान पर उत्खन्न प्रारंभ हुआ। हडप्पा के दो टीलों में पूर्वी टीलों को नगर टीला तथा पश्चिमी टीलें को दुर्ग टीला कहा जाता हैं। हडप्पा के आवास क्षेत्र में दक्षिण में एक कब्रिस्तान है जिसे कब्रिस्तान **आर. 37** नाम दिया गया हैं। हडप्पा से मिला सबसे विशाल अवशेष 6–6 की दो पंक्तियों में निर्मित कुल 12 पक्षों वाले एक अन्नागार का है। **यह अन्नागार हडप्पा सभ्यता के समस्त केन्द्रों से मिले अवशेषों में लोथल के गोदीवाडे के बाद सबसे विशाल है।**

हडप्पा में मिले अन्य महत्वपूर्ण अवशेष– 1. कर्मचारियों के आवास व मजदूरों के बैरक 2. एक मुद्रा पर पैर में साँप दबाये गरूड का चित्रण 3.प्रसाधन मंजूषा कांसे का दर्पण 4. हडप्पा से लकडी के ताबूत 5. पीतल की इक्कागाडी 6. मनुष्य के साथ बकरे का अस्थिपंजर आदि।

❖ **मोहनजोदडो (सिंध का नखलिस्तान)**

सिन्धी भाषा में मोहनजोदडा का शाब्दिक अर्थ है **"मृतकों का टीला"** यह सिंध के **लरकाना जिले** में **सिन्धु नदी** के दाहिने तट पर स्थित है। इसकी खोज **राखलदास बनर्जी** ने **1922** ई. में की। यहाँ से सभ्यताओं के साथ क्रमिक स्थल मिले है।

मोहनजोदडो का सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल **विशाल स्नानागार** है इसका जलाशय दुर्ग के टीले में है। इसमें पानी की आपूर्ति कुएँ द्वारा की जाती थी स्नानागार के उत्तर एवं दक्षिण पार्श्व में तालाब में उतरने हेतु सीढियाँ बनी थी। मोहनजोदड़ो की सबसे बडी ईमारत इसका विशाल अन्नागार है यह 45.71 मीटर लंबा और 15.23 मीटर चौडा हैं।

मोहनजोदडा से प्राप्त अन्य अवशेष –महाविद्यालय भवन, **कांसे की नृत्यरत नारी की मूर्ति, पुजारी (योगी) की मूर्ति,** मुद्रा पर अंकित **पशुपतिनाथ (शिव)** की मूर्ति, **सूती कपडा,** हाथी का कपालखण्ड, कुम्भकारों के 6 भट्टे, गले हुए तांबे के ढेर, सीपी की बनी हुई पटरी , घोडे के दाँत, गीली मिट्टी पर कपडे के साक्ष्य, अन्तिम स्तर पर बिखरे हुए नर कंकाल, कूबडद्वार बैल का खिलौना, बकरे की पीछे चाकू लिए हुए व्यक्ति का चित्रण। के.य. आर. केनेडी को मोहनजोदड़ो के कंकालों से मलेरिया के साक्ष्य मिले है। सर्वाधिक मुहरे मोहनजोदडो से प्राप्त हुई।

❖ **चन्हूदडो** – मोहनजोदडों से 80 मील दक्षिण में स्थित चन्हूदड़ो की खोज **1931 ई.** में **एन. जी. मजूमदार** ने की थी। इसका उत्खन्न 1935 ई. में अर्नेस्ट मैक ने किया। चन्हूदड़ो से प्राक् हडप्पा संस्कृति जिसे **झूकर** और **झांगर** संस्कृति कहते है, के अवशेष मिले है। चन्हूदडों से **वक्राकार ईंटे** मिली है।

चन्हूदडो **मनके** बनाने का प्रमुख केन्द्र था। चन्हूदड़ो से किसी दुर्ग का अस्तित्व नही मिला है। चन्हूदडों से प्राप्त अवशेषों में प्रमुख **अलंकृत हाथी के खिलौने, बिल्ली का पीछा करते हुए कुत्ते का पद चिन्ह, लिपिस्टिक , स्याही की दवात, बैल गाडी तथा इक्का गाडो।**

❖ **लोथल** – अहमदाबाद (गुजरात) में **भोगवा नदी** के तट पर खंभात की खाडी में स्थित लोथल की खोज **1957 ई.** में **एच.आर. राव** ने की थी। लोथल हडप्पा सभ्यता का एक प्रमुख **बंदरगाह** था यहॉ से पश्चिमी एशिया से व्यापार होता था। लोथल में गढ और नगर दोनों एक ही रक्षा प्राचीर से घिरे है। लोथल के पूर्वी भाग में **जहाज की गोदी (डॉक–यार्ड)** मिली है इसका आकार 214 × 36 मीटर है तथा गहराई 3.30 मीटर है। **लोथल का गोदीवाडा**

सबसे विशाल हडप्पा संरचना है। लोथल से मिली फारस की मुहर और पक्के रंग में रंगे हुए पात्रों के मिलने से यह पता लगता है कि लोथल पश्चिमी एशिया से सामूद्रिक व्यापार का एक प्रमुख केन्द्र था। **लोथल से चावल का हडप्पाकालीन प्रथम साक्ष्य मिला है।**

लोथल से मिली वस्तुएं – **डॉक–यार्ड (गोदीवाडा),** धान (चावल) व बाजरे का साक्ष्य , **फारस की मुहर, तीन युगल समाधियॉ,** घोडे की लघु मृण्मूर्ति, मिट्टी की 'ममी' का मॉडल, नावों के पॉच मॉडल व दो मोहरे, लोथल से अग्निकुंड के साक्ष्य मिले है। लोथल से प्राप्त एक मृदभाण्ड पर एक **कौआ तथा एक लोमडो** उत्कीर्ण है इसका साम्य पंचतन्त्र की कथा चालाक लोमडो से किया गया है। लोथल से मिले एक मकान में दरवाजा गली की तरफ न खुलकर सडक की ओर खुलता था जबकि सपूर्ण हडप्पा सभ्यता के अन्य मकानों में दरवाजे गली की तरफ खुलते थे।

- **कालीबंगा** – राजस्थान के हनुमानगढ जिले में स्थित कालीबंगा की खोज अलमानंद घोष ने 1953 में की। कालीबंगा से प्राक् हडप्पा काल के **'जुते हुए खेत का साक्ष्य'** मिला है। जो समकालीन मेसोपोटामिया सभ्यता में प्रचलित थी। अलंकृत ईंट व पूरा हाथी दॉत केवल कालीबंगा से मिला है।

कालीबंगा से मिले प्रमुख अवशेष – **बेलनाकार मुहर,** ईटों से निर्मित चबूतरे, **फर्श में अलंकृत ईटों का प्रयोग, हवन कुण्ड,** हल के निशान **(जुते हुए खेत),** युगल तथा प्रतीकात्मक समाधियॉ खिलौना गाडी व पहिये, तॉबे की वृषभ मूर्ति, ऊॅट की अस्थियॉ। कालीबंगा के अनेक घरों में अपने–अपने कुऍ थे। कालीबंगा से मिट्टी की **काले रंग की चूडियॉ** प्राप्त हुई है, अतः इसका नाम कालीबंगा रखा गया।

- **बनावली**– बनवाली हरियाणा के हिसार जिले में स्थित है। इस पुरास्थल की खोज **'रविन्द्र सिंह विष्ट'** ने 1973 में की थी। बनवाली में जल निकास प्रणाली, जो सिन्धु सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी, का अभाव है।

  बनवाली से प्राप्त कुछ अवशेष– खिलौने क रूप में हल आकृति, जौ के अवशेष।

- **सुरकोटदा**–गुजरात के कच्छ जिलें में स्थित सुरकोटदा की खोज सर्वप्रथम **1960** ई. में **जगपति जोशी** ने की। सुरकोटदा के अन्तिम स्तर से **घोड़े की अस्थियॉ** मिली है। यह महत्वपूर्ण खोज है क्योकि घोडे की अस्थियॉं अन्य किसी भी हडप्पा कालीन स्थल से नही मिलती।

- **रंगपुर**– रंगपुर अहमदाबाद जिलें में स्थित है। इसकी खोज **1931 ई.** में **एम.एस.वत्स** तथा **1953** में **एस.आर.राव** ने की। रंगपुर से न तो कोई मुद्रा और न ही मातृदेवी की मूर्ति मिली है।

- **राखीगढी**– हरियाणा के जींद जिलें में है। यहां रफीक मुगल ने खोज की। **यह भारत में धौलावीरा के बाद भारत के दूसरा बडा हडप्पाकालीन नगर है।** यह पूर्व हडप्पा स्थल भी है।

नोट– क्षेत्रफल में हडप्पा के सबसे बडे स्थल– **गनेडोवाल> हडप्पा> मोहनजोदडा> धौलावीरा> राखीगढो**

- **धौलावीरा**– धौलावीरा गुजरात के **कच्छ जिले** के भचाऊ तहसील में स्थित है। इसकी खोज **1967–68** ई. में **डॉ. जगपति जोशी** ने की। धौलावीरा एवं राखीगढो भारत में खोजे गये सबसे बडे हडप्पाकालीन नगर है। जहॉं अन्य हडप्पाकालीन नगर दो भागो, किला तथा निचले नगर में विभाजित थे वही धौलावीरा **तीन भागों में विभाजित** है। शासक वर्ग व अधिकारी वर्ग मध्यमा (मध्य नगर) में निवास करते थे। धौलावीरा से **खेल के स्टेडियम** तथा **सूचना पट्ट** या साइन बोर्ड के साक्ष्य मिले है। धौलावीरा से **बांध निर्माण** (जल संग्रहण) व **नहर प्रणाली** के साक्ष्य भी मिले है।

- **रोपड**– रोपड **पंजाब में सतलज नदी** के तट पर स्थित है। रोपड से **मानव की कब्र** के साथ **कुत्ते के शवाधान** के प्रमाण भी मिले है।

नगर नियोजन

हडप्पा सभ्यता की सबसे प्रभावशाली विशेषता उसकी नगर योजना एवं जल निकास प्रणाली है। नगर योजना जाल पद्वति पर आधारित है। सडके व गलियां योजनानुसार निर्मित की गई है। मुख्य सडकें उत्तर से दक्षिण की तरफ जाती है तथा सडके एक दूसरे को समकोण पर काटती थी। नगरों में प्रवेश पूर्वी सडक से होता था और जहॉं यह प्रथम सडक से मिलती थी उसे **'ऑक्सफोर्ड सक्रस'** कहा गया है सडके मिट्टी की बनी होती थी।

प्राप्त नगरों के अवशेषों में पूर्व तथा पश्चिम दिशा में दो टीले है। पूवी टीले पर आवास क्षेत्र के साक्ष्य मिले है तथा पश्चिमी टीले पर दुर्ग के साक्ष्य मिले है केवल लोथल व सुरकोटदा के दुर्ग और नगर एक ही रक्षा प्राचीर से घिरे हैं।

हडप्पा कालीन नगरों के चारो ओर प्राचीर बनाने का उद्देश्य शत्रु का आक्रमण से रक्षा करना नही था, अपितु **लुटेरों** एवं **पशु चारों** से सुरक्षा करना था। **हडप्पा सभ्यता के किसी भी स्थल से मन्दिर के अवशेष नहीं मिले है।** हडप्पा से मूर्ति निर्माण कला का प्रमाण मिलता है जबकि मंदिर निर्माण गुप्तयुग की देन है।

नालिया– जल निकासी प्रणाली सिन्धु सभ्यता की अद्वितीय विशेषता थी जो अन्य समकालीन सभ्यताओं में नही मिलती है। नालियां ईटों या पत्थरों से ढकी होती थी, परन्तु कभी–कभी **चूने** व **जिप्सम** का प्रयोग भी किया जाता था।

भवन – हडप्पा कालीन नगरों के भवन साधारणतः छोटे–छोटे आवासोय भवन होते थे। इनमें चार–पाँच कमरे होते थे। कुछ विशाल दो मंजिला भवनों का भी निर्माण हुआ। प्रत्येक मकान में रसोई घर व स्नानाघर होता था। घरों के दरवाजें मुख्य सडक की ओर न खुलकर पिछवाडे (गली) की ओर खुलते थे। मोहनजोदड़ो में विशाल स्नानागार के निर्माण में **बिटुमिन** का प्रयोग हुआ है।

राजनीतिक व्यवस्था

हडप्पा संस्कृति के राजनीतिक स्वरूप की कोई निश्चित जानकारी नही है परन्तु इसके व्यापक विस्तार एवं नियोजित नगरों को देखकर लगता है कि इस सभ्यता में शासन पर पुरोहित वर्ग का प्रभाव था। **स्टुअर्ट पिग्गट** ने मोहनजोदडो एवं हडप्पा को एक विस्तृत साम्राज्य की जुडवां राजधानियां बताया है। हीलर के अनुसार हडप्पा सभ्यता में मध्यम वर्गीय जनतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था थी। इसमें धर्म की महत्ता को स्वीकार किया गया है।

सामाजिक जीवन

मुहरों पर अंकित चित्र व मातृदेवी की मूर्ति से यह लगता है कि हडप्पा समाज सम्भवतः मातृ सत्तात्मक था। हडप्पा सभ्यता के नगर नियोजन को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि समाज अनेक वर्गो जैसे–पुरोहित, व्यापारी, अधिकारी, श्रमिक इत्यादि वर्गो में विभाजित था। हडप्पा सभ्यता के लोग शान्तिप्रिय थे, युद्वप्रिय नही। लोग सूती व ऊनी दोनों प्रकार के वस्त्र पहनते थे। आभूषणों का प्रयोग पुरूष व महिलाये दोनो करते थे। मनोरंजन हेतु पासे का खेल (शतरंज), नृत्य, पशुओं की लडाई आदि साधन थे।

शवों का अन्तिम संस्कार तीन प्रकार से किया जाता था :–

- **पूर्ण समाधिकरण** – इसमें शव को पूर्ण रूप से भूमि में दफना दिया जाता था।
- **आंशिक समाधिकरण** – इसमें शव पशु पक्षियों के खाने के बाद शेष भाग को भूमि में दफनाया जाता था।
- **दाह संस्कार** – हडप्पा से आंशिक शवाधान, मोहनजोदडो के कलश शवाधान तथा कालीबंगा से प्रतीकात्मक शवाधान के साक्ष्य मिले हैं। हडप्पा में शवों को दफनाने तथा मोहनजोदडों में जलाने की प्रथा विद्यमान थी। हडप्पा में शव उत्तर–दक्षिण दिशा में दफनाये जाते थे जिसमें सिर उत्तर की आर होता था।

धार्मिक जीवन

पुरास्थलों से मिले अवशेषों के आधार पर ऐसा लगता है, कि हडप्पा सभ्यता के लोग **मातृदेवी, पुरूष देवता (पशुपति नाथ) लिंग–योनि, वृक्ष, जल** आदि की पूजा करते थे। **सबसे ज्यादा पूजा मातृदेवी की होती थी। मार्शल** ने **मातृदेवी** को **पृथ्वीदेवी** कहा है।

मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर पर तीन मुख वाला एक पुरूष ध्यान की मुद्रा में बैठा है उसके सिर पर तीन सींग है। उसके बायी ओर एक **गैंडा** और **भैंसा** तथा दायी ओर एक **हाथी** और एक **चीता** (व्याघ्र) व सामने एक **हिरण** है यह **पशुपति शिव का रूप** माना गया है। **मार्शल** ने इसे **आद्य शिव** कहा है। हडप्पा सभ्यता के लोग पृथ्वी को उर्वरता की देवी मानकर इसकी पूजा करते थे। मूर्तिपूजा का आरम्भ सिन्धु सभ्यता से ही होता है। कालीबंगा से अग्नि कुंण्ड भी मिले है संभवतः ये यज्ञ की वेदी थी। हडप्पा सभ्यता से मिले **स्वास्तिक** व चक्र **सूर्यपूजा** के प्रतीक है। स्वास्तिक चिन्ह सम्भवतः हडप्पा सभ्यता की देन है। भारत में लिंग पूजा का आरम्भ सम्भवतः प्रोटो–आस्ट्रेलाइड जाति में हुआ था। **पीपल** सबसे पवित्र वृक्ष तथा **बतख** को पवित्र पक्षी माना जाता था।

आर्थिक जीवन

हडप्पाकालीन अर्थ व्यवस्था कृषि पशुपालन एवं आन्तरिक व विदे"ाी व्यापार पर निर्भर थी। अर्थव्यवस्था की मुख्य आधार **कृषि** ही था। कालीबंगा से प्राक्–सभ्यता स्तर के जुते हुये खेत के साक्ष्य मिले है। संभवतः हडप्पा सभ्यता के लोग लकडी के हलों का प्रयोग करते थ। फसल काटन के लिये पत्थर के हँसियों का प्रयोग करते थे। मोहनजोदडो, हडप्पा व अन्य नगरों से अन्नागार के साक्ष्य विकसित कृषि अवस्था को इंगित करते है। हडप्पा सभ्यता के लोग नवम्बर के महीने के बाढ का पानी उतरने के बाद उपजाऊ मिट्टी में गेहूँ व जौ बोते थे तथा अप्रैल में काट लेते थे। हडप्पा सभ्यता में **नौ प्रकार के फसलों** की अब तक पहचान की गई है **चावल, गेहूँ (तीन किस्में), जौं (दो किस्में), खजूर, तरबूज, मटर, राई, तिल, कपास।** एक किस्म ब्रासिकाजुंसी भी मिली है। हडप्पा सभ्यता के लोगों का मुख्य खाद्यान्न **गेहूँ एवं जौ** थे। सिन्धु सभ्यता के लोग रागी एवं गन्ने से अपरिचित थे। **लोथल से चावल** व **बाजरे के**, बनवाली से जौ, तिल व सरसों के तथा हडप्पा से गेहूँ व जौ के दाने के साक्ष्य मिले है। सर्वप्रथम **कपास** उगाने का श्रेय सिन्धु सभ्यता के लोगों को है इसलिए यूनानियों ने इसे सिंडोन, जिसकी उत्पत्ति सिन्ध से हुई है, नाम दिया है।

पशुपालन – हडप्पा सभ्यता के लोग बैल, गाय, भेड, बकरी, सुअर आदि पालते थे। **गाय की आकृतियुक्त कोई मूर्ति नहीं मिली है।** हडप्पा संस्कृति म **कूबड वाला बैल** वि"ोष महत्व रखता था। घोडे के अस्थिपंजर केवल सुरकोटदा (गुजरात) नामक स्थल से मिले हैं। बलूचिस्तान स्थित राना घुण्डई के निम्न स्तरीय धरातल से घोडे के दाँत प्राप्त हुए है। गुजरात के निवासी हाथी पालते थे।

शिल्प कला व धातु– हडप्पा सभ्यता कांस्य युगीन सभ्यता थी। यहाँ के लोग तांबे के साथ टिन मिलाकर **कांसा** तैयार करते थे किन्तु कांसे के औजार बहुतायत से नही मिलते है। हडप्पा सभ्यता के मृद्भाण्ड **लाल एवं काले रंग** के होते थे। हडप्पा सभ्यता के लोग लोहे से परिचित नही थे वे तलवार से भी परिचित नही थे।

व्यापार– हडप्पा सभ्यता मुख्यतः व्यापार प्रधान थी। इसकी समृद्वि भी व्यापार के कारण थी। व्यापार **वस्तुविनियमय प्रणाली** द्वारा होता था। धातु के सिक्कों का प्रयोग नहीं होता था। सिन्धु सभ्यता के **सुमेरियन सभ्यता** व **मिस्त्र की सभ्यता** से व्यापारिक सम्बन्ध थे। सुमेरियन लेखों से ज्ञात होता है कि सुमेरिया के व्यापारी **मेलुहा** के व्यापारियों के साथ वस्तु विनिमय प्रयोग करते थे। मेलुहा का समीकरण सिन्धु प्रदे"ा से किया गया है। लोथल से फारस की मुहरें तथा कालीबंगा से बेलनाकार मुहरें भी सिन्ध सभ्यता के विदे"ाी व्यापार को द"ार्ाती है। **बहरीन द्वीप (दिलमुन)** के व्यापारी विदे"ाी व्यापार में बिचोलियों का कार्य करते थे। सुत्कागेंडोर, बालाकोट, अल्लाहदीनों, लोथल एवं सतकोतदा अरबसागर के तट पर सैन्धवकालीन बन्दरगाह थे। सिन्धु सभ्यता की मुहरें मेसोपोटामिया के सूसा, उर, निप्पुर, किश, उम्मा आदि शहरों में पाई गई है। तेल असमार (मेसोपोटामिया) से भी सिन्धु सभ्यता की वस्तुएं मिली है। मेसोपोटामिया (सुमेरिया) के अभिलेखों में मेलुहा (सिन्धु प्रदे"ा) के साथ व्यापार के दो मध्यवर्ती केन्द्रो का उल्लेख मिलता है– **1. दिलमुन** (बहरीन) **2. माकन** (माकन का समोकरण ओमान से किया जा सकता है)

आयात की जाने वाली वस्तुएं		स्थल
टिन,चॉदी	–	ईरान, अफगानिस्तान
तांबा	–	खेतडी (राजस्थान),बलूचिस्तान
सोना	–	ईरान, अफगानिस्तान, दक्षिण भारत (कर्नाटक)
फिरोजा	–	ईरान
लाजवर्द (वैदूर्य)	–	बदख्शां (अफगानिस्तान), मेसोपोटामिया
f"ालाजीत	–	हिमालय क्षेत्र
नील रत्न	–	बदख्शां (अफगानिस्तान)
हरित मणि	–	दक्षिण भारत
सेलखडी	–	बलूचिस्तान, राजस्थान, गुजरात

लिपि – हडप्पा लिपि को अभी तक पढने में सफलता नहीं मिली है। यह **भावचित्रात्मक** लिपि है तथा उनकी लिखावट क्रमशः दांयी ओर से बांयी ओर जाती थी। इसे बेस्टोफोडन लिपि कहा गया है हडप्पा लिपि में 64 मूल चिन्ह एवं 250 से 400 तक चित्राक्षर है। सबसे ज्यादा प्रचलित चिन्ह मछली का है अधिका"ा लिपि के नमूने **सेलखडी की मुहरों** पर मिले है। सिन्धु लिपि को पढने का **सर्वप्रथम प्रयास वेडेन** ने किया। हडप्पा सभ्यता के मानकीकृत मापतोल प्रचलित था तोल की इकाई 16 के अनुपात में थी, जैसे– 16,64,160,320,640 आदि। इनके बाट द"ामलव प्रणाली पर आधारित थे। मोहनजोदडों में सीप का बना हुआ तथा लोथल से हाथीदॉत का बना हुआ– एक–एक पैमाना (स्केल) मिला है। इसका उपयोग संभवत, लम्बाई मापने में किया था। अब तक विभिन्न हडप्पाकालीन स्थलों से लगभग 2000 मुहरें प्राप्त हुई है। **सबसे अधिक मुहरें मोहनजोदड़ो (लगभग 500) से मिली हैं।** हडप्पााकालीन मुहरें **सेलखडी** की बनी हैं।

क्र.सं.	विद्वान	पतन के कारण
1.	गार्डन चाइल्ड एवं व्हीलर	आर्यो का आक्रमण
2.	एस.आर.राव, जान मा"ल, मैके	बाढ.
3.	आर.एल.स्टाइन, अमलानन्द घोष	जलवायु परिवर्तन
4..	के.यू.आर.केनेडी	प्राकृतिक आपदा
5.	फेयर सर्विस, रफीक मुगल, बी.के.थापर	पारिस्थितिकी असन्तुलन

सैन्धव मुहरें वर्गाकार, आयताकार, गोलाकार व बेलनाकार हैं। सबसे अधिक मुहरें वर्गाकार हैं हडप्पा सभ्यता की मुहरों पर सर्वाधिक अंकित प"ा **एक श्रंग पशु** है। हडप्पा सभ्यता की मुहरों पर व्याघ्र का अंकन मिलता है। जबकि वेदों में व्याघ्र का उल्लेख नही मिलता।

सभ्यता का पतन

हडप्पा सभ्यता के क्षेत्रों से अत्यधिक संख्या में आग में पकी हुई टोराकोटा की मूर्तियॉ मिलती है इनका प्रयोग खिलौनों एवं पूजा के लिये मूर्तियॉ बनाने में होता था। हडप्पा सभ्यता से निम्न चीजों के कोई अव"ोष नही मिले हैं –

1. नहरों द्वारा सिंचाई **2. नदी उपासना** **3. मंदिर**
4. सिंह **5. पन्ना** **6. लोहा**